कथा-सान्निध्य

हरियश राय

कथा-सान्निध्य

कथा-सान्निध्य

हरियश राय

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19019-48-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
अनुज्ञा बुक्स

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

KATHA SANNIDHYA
Critical Analysis of Hindi Fiction ***by Hariyash Rai***

अनुक्रम

परिदृश्य

- बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक : आज की कहानी 9
- ‘पहचानता नहीं अभी रहबर को मैं’: हिन्दी कथा-आलोचना 12
- साम्प्रदायिक सन्दर्भ और समकालीन हिन्दी कहानी 15

कहानी

- कथा-परिदृश्य में गरिमामय उपस्थिति : दूधनाथ सिंह की कहानियाँ 33
- सघन अनुभूतियों से गुज़रती प्रबोध कुमार की कहानियाँ 40
- मानवीय गरिमा और संघर्ष के स्वरों को व्यक्त करती हिमांशु जोशी की कहानियाँ 46
- स्त्री के वजूद की कहानी : एक और बनवास : नमिता सिंह 54
- मदद : धार्मिक कट्टरता के प्रतिरोध की कहानी 59
- संवेदना का विस्तार करती कहानियाँ : जगो देवता जगो 63
- इतिहास और वर्तमान के कथानक : मीरा कान्त की कहानियाँ 66
- यूरोपीय परिवेश के मन की गहरी अभिव्यक्ति : सविता सिंह की कहानियाँ 80
- स्त्री-जीवन के ज्वलन्त सवालों की रचनात्मक अभिव्यक्ति 88

उपन्यास

- परमाणु विस्फोट के एक बड़े कालखंड को अपने में समेटता अवधेश प्रीत का उपन्यास : रूई लपेटी आग 99
- भागलपुर दंगों का विशाल कैनवास : गौरीनाथ का उपन्यास ‘कर्बला दर कर्बला’ 104
- राजनीति और नौकरशाही की लूट से बने सिस्टम को दर्शाता राजेन्द्र दानी का उपन्यास ‘जिसका अन्त नहीं’ 108
- बत्तीस राग गाओ मोला : उत्तराखंड के एक कवि-चित्रकार का अनदेखा रूप 112

रचना-कर्म

- प्रेमचन्द को पढ़ना अपने-आपको नैतिक बनाना है 119
- अग्निसेतु : काज़ी नज़रुल इस्लाम की जीवनी : जातीय एकता की ताकत 124
- मुक्तिबोध की आत्म कथा : एक युग की दास्तां 130
- विभाजन का ज़हरीला सन्ताप और कृष्णा सोबती की रचनात्मकता 135

- मेरा ओलिया गाँव : शेखर जोशी: अपने गाँव की मार्मिक अभिव्यक्ति 141
- स्मृति में रहें वे : शेखर जोशी : इन संस्मरणों को पढ़ना अपने भीतर मानवीयता के स्रोतों को बनाये रखना है 147
- मन्नू भंडारी : एक अलग शख़्सियत 153
- पहाड़ मेरे सखा है : ज़िन्दगी के विराट कैनवास की झलक 158
- गाँव-गाँव-डगर-डगर धूल फाँककर लिखी गयी जाबिर हुसेन की कथा-डायरियाँ 163
- बेहतर दुनिया की सम्भावनाओं की तलाश करता रमेश उपाध्याय का रचना-कर्म 175

बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक : आज की कहानी

पिछले काफी समय से कहानियों को पढ़ते हुए मैंने यह महसूस किया कि आज लिखी जा रही कहानी संघर्षशील मनुष्य के उन सपनों को भी वाणी दे रही है, जो बरसों पहले सँजोए गये थे, और जिन्हें पूरा होने की चाहत एक अर्से से उसके मन में रची-बसी थी। आज की कहानी भारतीय समाज के विकास को उसकी निरन्तरता और परम्परा में देख-समझ रही है और पूँजीवाद और सामन्तवाद के चक्र में फँसे आदमी के दुःख, उसके संघर्ष, उसके अन्तर्द्वन्द्व को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ, पूँजीवाद और सामन्तवाद के गठजोड़ से निकलने की छटपटाहट को भी सामने ला रही है।

आज की कहानी में एक गतिशील सकारात्मकता देखने को मिलती है और यह सकारात्मकता हमें बेहतर भविष्य की कामना की ओर ले जाती है। कहानी किसी अनिश्चय या द्वन्द्व में न रहकर एक समाधान की ओर आगे बढ़ती दिखाई देती है। आज की कहानी में समाज के विकास की स्थितियाँ और उसमें हो रहे घात-प्रतिघात अभिव्यक्त होते हैं और इसीलिए कहानी समाज से सीधे जुड़ती है। इसीलिए आज की कहानियाँ सहज-सरल हैं, उनमें दुरूहता या जटिलता नहीं है। जटिल समय को सहजता से सामने रखना आज की कहानी की बहुत बड़ी खूबी है।

आज लिखी जा रही कहानी में घटनाशीलता एक अनिवार्य तत्व की तरह है। घटना के बिना कहानी बन ही नहीं सकती। घटना से ही कहानी का कथानक, कहानी की संवेदना, कहानी के विचार और चरित्र बनते हैं। घटना को कहानी की संरचना भी माना जा सकता है जिसमें कहानी की कथा शामिल होती है और इस कथा में कुछ पात्र, कुछ जीवन-स्थितियाँ शामिल होती हैं और इनसे मिलकर एक कथानक बनता है जो कहानी को कहानी बनाता है। यदि कहानी में घटनायें न हों, तो कहानी अमूर्त हो जाती है। अतार्किक घटनायें भी कहानी में अमूर्तता को बढ़ाती हैं। ज़ाहिर-सी बात है कि कहानी में अमूर्तता स्वीकार्य नहीं होती। लेकिन केवल घटनाओं या सिलसिलेवार घटनाओं के संयोजन से ही कहानी नहीं बनती। कहानी बनती है घटनाओं के व्यवस्थित संयोजन से, घटनाओं की तार्किकता से, लेखक की संवेदना, मूल्यों, विचारों, धारणाओं और दृष्टि से।

आज की कहानियाँ अपने समय के यथार्थ को समग्रता से सामने लाती हैं। इस लिहाज़ से ये कहानियाँ पहले लिखी जा रही कहानियों से कई कदम आगे हैं। आज का यथार्थ पहले की तुलना में अधिक संश्लिष्ट, अधिक जटिल और अधिक पेचीदा हो गया है। आज के इस यथार्थ ने मनुष्य और मानवता के सामने अनेक संकट खड़े कर दिये हैं। अपने समय पर लिखते समय आज का कहानीकार, अपने समय के राजनैतिक व सामाजिक स्रोतों की जाँच-